

## विषय-सूची

- १ प्रकाशकीय वचन्य
- २ वचन्य ( संकलविता )
- ३ डाक का परिचय
- ४ समर्पण ओ चित्र (दाताक)

### विशुद्ध डाक वचन ( पद्धरण ग्रन्थ )

- १ व्यवहार प्रवीण सँ उद्भुत
- २ विभिन्न निर्णय
- ३ प्राप्तवाल विचार
- ४ तद्विषय विकसोपशील
- ५ प्रकीर्ण नामक ओतिव ग्रन्थ

### प्रकाशित खण्ड

१ सामान्य प्रकरण	१५
२ गृहस्थ प्रकरण	२१
३ खेती प्रकरण	२२
४ वर्षपल	२६
५ वर्षा प्रकरण	४२
६ गृहस्थधर्म प्रकरण	५४
७ यात्रा प्रकरण	५६
८ अद्भुत प्रकरण	६०
९ ग्रहण	६६
१० प्रद्वन प्रकरण	६९
११ वनस्पति प्रकरण	६७
१२ विविध प्रसङ्ग	६८
१३ प्रकीर्ण	६९

—:❀:—

❀ विशुद्ध डाक वचन ❀

## —विशुद्ध हाक वचन—

( तालपत्र-लिखित )

—००००००—  
—००००००—

राशि-स्वभाव विचार—

मेघ मीन तिअ धण्डा दीस,  
ता उप्परि दिअ पल अठसीस ।  
वृष कुम्भ खौरण्डा मान,  
पल एगारह भुगु तिस मान ॥  
मिथुन मकर पल तीन गुन,  
कर्कट तैतालीस धन ।  
सिंहदि वृश्चिक सप्ततलीस,  
तुल सह कन्या पल अठसीस ॥  
मिथुना खचो मोचे,  
मोचे सब पल कहिअ ।  
पाँचे दण्डे सबे पल लहिअ ॥

तिथ्या पूर्णा वाढता मुख्य देवदा तीस ।  
ताडे ओढे भुमिमुख मास अठारह सीस ॥  
जते देवदा चन्दगड तत्ते शनि रवि साजि ।  
वारह मास बेहफय इति गुनि वृत्त काजि ॥



सुहृत् विचार—

स्थिति परिमाण्ड साठि दण्डा, से छप करह बारह खण्डा ।  
अहा भदा कितिक मूल, मनइ ढाक सवेटा करे चूर ॥

सिद्धियोग (तथा च डाकः)—

नवमी चौठि चौदशि भव पोहे,  
षड्विंश एकादशि छठिक बिजोहे ।  
तिअ अष्टविंश तेरविंश भूपुते,  
सओनि दुइ दोआदशि वा वत्ते ।  
पाँचविंश पुनिमा दशविंश वेहफय,  
सिद्धियोग एहु मुनिवर जम्पए ॥

यमघण्ट विचार—

जइ रविवारे मघा धनिष्ठा सोमे पुष्य विशाखा(खा)लडा ।  
मङ्गल कुत्तिक भरणि विरुद्धा, कर पूषफल्गुनी बुध विरुद्धा ॥  
चारे बेहफय मूल रेवती, शुक्ल(क)हि वारहि रोहिनि स्वाती ।  
अवणा शतभिष जइ शनिवारे, एहु यमघण्ट कहिय गोआरे ॥

दशतिथि—

सनि सत्ते शुक्ल छप दुइ, छठि वेहफय होए विरुद्ध ।  
बुध तीअ दोअशि सूर, मङ्गल दशमी परिहर दूर ॥  
होए एकादसि सोमेवारे दशतिथि फूर कहिय गोआरे ॥  
(रवि-१२, सोम-११, मङ्गल-१०, बुध-९, शुक्र-८, शनि-७)

राहुदय—

पूर्वा दाह पायाउने (ले ?) अस्स चलन्ते चलइ ।  
दिम्स बिदिस्से जाइ थामे पाछे शुभ कहइ ॥  
जइ अगोतह खाइ.....

योगिनी विचार—

पत्नी पचा पत्ता दूआ, नवे नवे योगिनि हुआ ॥  
( ई पाठ छपल “डाकवचनानुत” मे भेटैछ )

पशुयात्रा विचार ( तत्र डाकः )—

तिन्निओ पूर्व मृगसनि ज्येष्ठा-  
भरणि विशाख (ख) अश्लेष धनिष्ठा ।  
चालिअ चौपा होइह श्रद्धी,  
जत्तहि चालिअ तत्तहि सिद्धी ॥

द्वितीयोदितचन्द्र विचार—

मच्छाभेडा दाहिना अवसरे उत्तर काञ्चि ।  
घनइव लहा समहिंसम अवर बोलि घुञ्च काञ्चि ॥

अठविंश—

पत्त विराडा सिंह सुनइ अहि मूसा गज मेप ।  
अचे हले दुहुकरसे गुणि वर गपमान डलेख ॥  
मेपे मूसें बहुसम्पत्ती गजे विराडे अतिकर सुद्धी ।  
नागे सिहे होइह खेडा-सुनइ धरि पछादिअ भेट्टा ॥

नवान्न भक्षण ( तथा च डाकः )—

अस्सनि रेवण अवर धनिष्ठा  
हथ आदि कप पाचम खण्डा



—चारि—

एकरा उत्तर दुइ गुरु मन्त्री  
कापल परिहइ न करइ मन्त्री ॥  
संखा सो (ना ?) परिहइ रत्ता  
वरवा शत एक जीवतु कन्ता ॥  
पुण्य पुनर्वसुहुँ सुपरिहरइ रोहिणि पालइ वज्र,  
तीनि उत्तर परिहरइ जइ भत्तारे कज्ज ॥

धीजिवन्धन-विचार ( तथा च डाकः )—

कहुइ धान कि अस्सनि श्रवणे  
अहा रेवण सुगकर मूले ।  
मधा सवाती न कर विचार  
वाउत गुरुगुरु शुक्रइ चार ॥

गामशस विचार—

सेवक रे सुनु गामक वत्ता,  
अखखर होशुण चौशुण मत्ता ।  
गामे नामे एक करिजइ,  
गुनि अक्के भाग हरिजइ ॥  
एक सुन जओ पावसि चारि,  
छाड दलतिहि होइइ मारि ।  
तीजो पाँचे मान समान ।  
वेविछक जओ पावसि ओरे,  
सर्वओ वित्त समपिह सोरे ॥

—पाँच—

अटदिशा—

पक्षी वसुशर पञ्च मजार-  
षट् केशरी सुनइ सरचारि ।  
अदिशर सात इन्दुशर एक,  
गजशर तीनि वैरिशर मेप ॥  
पत्ति विराडा सिंह सुनइ-  
अहि मूला गज मेप ।  
अचे हले मिलि दुहु करसे,  
गुनिवर सपमानवशेष ॥

मेपे मूसे बहुसम्पत्ती - गजे विराडे अतिकर सिद्धी ।  
नागे सिंहे होइइ खेष्टा-सुनहे चारि पक्षी तिअ भेष्टा ॥

अपर गोडीय प्रकार :-

गामे ठामे नामे जान सोम शुक्र बुद्ध पो (खो) जिआने आन ।  
बोलथि डाक एतेओ कएलेप(ख)अलपे कालें किछु सम्पद देख ॥

फलश्रुति:-

अको कुजे लावए ठाओ गोधन जन नहि बढावए काओ ।  
उदये हो तँ बहए अण्ड, उदए भरि आन पावए भओ ॥  
चान्दे बुधे लावए ठाओ तारेहि बसा सम्पत्ति पुचजाओ ।  
लच्छी थाकए वा हेरि नेहे, होइ चान्द ठानि रह पहरे ॥  
शुक्रदीसा लाभ छाडिवाओ मूलहुँ चोरी बोलए चालए ।  
सकुलए नव सञ्चित धन न हरइ तर..... ॥



—छी—

शुक्रहि दीसा बहए जवे पुत्र परिवार बढ़ावए सवे ।  
सनि दीसा लावए पू०..... हाथे छातए लावए दूर ॥

अपरश्र डाकः—

वरगक कर सवे वृभइस आन,  
वृभितहुँ वृभइसँ कर अनुमान ।  
जोइसि जोए सदिध कपलेइ,  
दाहिन सर वाम कपलेइ...॥  
सुन सुन स्वामिओ गासक नाग,  
जे जाह आगर से ने भाग ॥

गर्भापत्य जिज्ञासा (अपरश्र डाकः)—

अरुखर दोगुण चौगुण सत्ता भाग हरि बूड जले वेत्ता ।  
बल उज्जारे नाथ इकारे पट्ट धनी फूर बहल गोआरे ॥

स्त्री-पुरुष जीवन-मरण जिज्ञासा—

अरुखर दोगुण चौगुण सत्ता भाग हरह ता हरसि नेत्ता ।  
एकसून जवो पुरुष हल(ण?)टा, वैरि होए जवो तिरि अविळ(ण?)टा

अथलेवा चकम् (तत्र डाकः)—

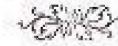
सिरसत्ता उरसत्ता पिचिहिं देखि पञ्चण(म?) खत्ता ।  
हाथे दुइ-दुइ पादहि चारि सेवाचक कहवो विचारि ॥  
सिर सम्मानइ देखि दूच हीओ वित्त ससम्पइ सख ।  
हाथे देखि पुरवइ आस पिचि (टि) हि निष्फल पाजें परवास

—ताव—

अरिपट्टक लक्षण (तत्र डाकः)—

धनु बृष बुध्निक सुगमानी भरण करा अरिपट्टक जानी ।

[ ई म० म० इरपति कुत "स्ववहार प्रदीप" मे जे वचन प्राप्त भेल  
अछि ओकर प्रतिलिपि थिक । ]



[ २ ]

[ १. म० म० महाराज शुभहर ठाकुर कुत "तिथिद्वैध विनय" सँ ]

सुखरात्रि विचारे डाकः—तथाच भाषा—

खाती दीआ जो वरए विशाखा खेलए नाए ।  
अबस ओ नरवर जुझए अन्न सहपा जाए ॥

००००

[ २. "ग्रामवास विचार" ग्रन्थमे प्राप्त वचन ]

ग्रामवास विचार (अत्र डाकः)—

उत्तरे आगस्त कहिहे थीर-  
दक्षिण कुशल कहए बलधीर ।  
पूर्व दिगे काब निषेध  
पश्चिम दिशा तहिलने पेध ॥  
चारि चौदीश कह दण्ड फारि  
छोड़इ दरघरि होइइ मारि-  
उत्तर दक्षिण कुशल थिर कहवास-  
चारु कोन बोल उदास ॥



—आठ—

पश्चिम दिशा दूर सवि बोल-  
करह काज पिआ होएत अमोल ।  
मामवासविचार क प्रक्रिया शिवाचलि पर अछि ।

००००

[ ३. तद्विषय-लिखित "पिङ्गमोर्वशी नाटक" मे प्राप्त वचन ]  
तहरोपण विचार—(तत्र डाकः)

बिषपर पाकदि पपपर काँट-  
पच्छिम लोहित फूल नहि आँट ।  
वायव तैतरि उत्तर तार  
ईसानक चदरी परत अकाल ॥

००००

[ ४. "अर्कोण" नामक उद्योतिष क ग्रन्थ सँ ]

अथ शुद्धयोगिनी, यथा वा डाकः—

पत्नी पचा खसा दूआ नवे-नवे योगिनि हुआ ।  
अओवे योगिनि पचदह उद्वे दह परमान ।  
नामे दहिने तेरह तेरह नयो सम्मुख कए जान ॥  
फलमर्थ—

अओवे योगिनि मार मारकर, पाछे अति सुखदेए ।  
नामे योगिनि लाभ करावए, दहिने जीव हरिखेए ॥  
काक शकुन, डाकः—

रवि लग्न [भ] सोम अरु सिद्धि, मङ्गल कलह परवास ।  
बुध [ध] समागम बन्धु सँ, गुरु पूरण सवे आस ॥  
शुक्र अमोघ... शनि मरण, काल मन्दफजजीन ।  
दाहिन दिन अरु वाम गुण, काक वचन परमान ॥

—नओ—

वर्षा सुदृष्टिकलम्, अत्र डाकः—

फाल्गुन चौदिस सन्ध्याकाल-  
वर्षा धूमध वाय विचार ।  
पूर्वें पुरिया बहए अनङ्गे-  
एक ओ मेव न लागए अङ्गे ॥  
अग्निकुमारी बोलए डाक-  
भुपे न भरते परजा भाग ।  
दक्षिण पवन बहए कस्तुराल-  
अन्न न उपजए दाहाकाल ॥  
दक्षिण कोने सत्र खन बहइ-  
अवस सुभिस निरन्तर रहइ ।  
पच्छिम पछवा बहए अवार  
कोदव कुरधी हो वेवहार ॥  
भरडार कोन बोलए थोइसि-  
धोधी थोअए । कूओ पैसि ।  
उत्तर पवन सहज जवों बहइ-  
भेड़रि अन्न मूल लहु कइइ ॥  
ईसान कोने दुन्दुर बाजए-  
सरि साक बसवे उपजावए ॥  
एतक परए बह जवों बारधात-  
अन दए धरनी अन दए धात ॥



चन्द्रविचारः—

मेघ सिंह धनु पूरवे चन्दा-  
दक्षिण कन्या हृष मकरन्दा ।  
पश्चिम कुम्भ तुला अथ मिथुना ।  
उत्तर कर्कट वृश्चिक मीना ॥

अथ यात्रायात्रायो डाकः—

अश्विनि गमन कहए शुभ सिद्धी-  
भरणी गेल न जिव अरुद्धी ।  
किर्तिक काएक लन्तद दिजए-  
रोहिणि गमन मनहिमन खिजए ॥

गुगशिर गेल रभस बहावए-  
अदा गेल पलटि न आवए ।  
पुनु पुनु सिद्धि पुनर्वसु गमने-  
पुष्यहि लेखि की लेखव गमने ॥  
गड असरेस पड़त कलेसे-  
मथा गेल घर यम केरो ।  
पूर्वा फल्गुनि कज न सिम्भइ-

तिअ उत्तर सुर यम पाशहि बन्धिअ [इ?] ॥

हस्तहि हस्त कहओ सम्पत्ती-  
चित्ते चलइ न परइ विपत्ती ।  
रमत सोआती जाएत जाँहा-  
मरत विशायाँ जाएत कहाँ ॥

अवस ओ काज होइह अनुराधे-  
जेठा पेठ भरए उँचाहे ।  
मूज मूल किचव गुण पाइअ-  
पूर्वापाद पलटि न आवइ ॥

श्रवणा गेल कि सुनिअ अथ श्रवणे-  
असुभफल होइह धनिष्ठा गमने ।  
शतमिष हो जवोँ देव पसन्ता-  
रेवए रमए होअए बहुधजा ॥  
पड़िवा नवमी मूल शनि श्रवणा-  
पूर्व दिशि नहि सिम्भए गमना ।  
पञ्चक अश्विनी वान गुण तेरह-  
एहि दिवस जनु दक्षिण डेरह ॥  
रवि छट्टि चौदसि रोहिणि पुषा-  
पश्चिम गमने होइह दुख्खा ।  
कुज दुइ दशमी जवोँ..... होअ-  
हत्था उत्तर गमने अवस्था..... ॥  
अद तिअ सोमे अनन्दए उच्छए-  
चौरए अवसि युध नहि लच्छइ [ए?] ।  
अक्के सप्तमि वायव नहु-  
डाक कह कुइह सफटा ॥

बीज वपन विचारः = तमडाकः =

कृषिकाज बीआर मानव-  
चारिकाज अठ्ठास बपा (खा) नव ।

—बारह—

पूर्व नख अनाइवि कोणे-  
दक्खिन किञ्चित् नैर्द्धत सोने ॥  
पच्छिम लाभ कोण पत्त-  
उत्तर देय बहुत सुखरत्न ।  
ईशान कोण दैवसे जाए-  
सगुनक देल सवे केओ खाए ॥  
शुकद वान शनीश्वर अरु षोड-  
मङ्गलवार विश्वा हो थोड ।  
रवि अनाइवि सोम पद्दहा-  
सुख (ध) वृहस्पत बाउग कँहा ॥  
[बाउग रोपन जोतन हरठाठ ? ]



—अथ प्रकाशित खण्ड—



## मङ्गल वचन

गिरजा गिरा ओ गोविन्द गणेश,  
सकल काज मे सुगिरी गिरिजेश ।  
पाँच गकारें बिह नहि होय ।  
कहथि 'डाक' ई बुझु सब कोय ॥१॥

अथ सामान्य प्रकरण

तिथि नाम ज्ञान वचन—

पड़िया पछो एकादशि नन्दा  
द्वितीया सप्तमी द्वादशि भद्रा ।  
तृतीया अष्टमी त्रयोदशि जया  
नवमी चतुर्दशि रिक्ता भया ॥  
पञ्चमी दशमी पञ्चदशी  
अमावास्या, कहथि "डाक" ई पूर्णासमा ॥

सिद्धि योग—

शुक्रक पड़िया एकादशि होई,  
सिद्धि योग कह पछी खच कोई ।  
बुधबोसर जो भद्रा पावै,  
सिद्धि योग तेहि जग मे गावै ॥

—सोलह—

जया तिथि जौ मङ्गल होय,  
सिद्धि योग मन मानीय सोय ।  
शनि दिन मे रिक्ता जौ आवै,  
सिद्धयोग गुनि जन तेहि गावै ।  
पूर्णा तिथि गुरु वासर जानि,  
सिद्धि योग कह "डाक" बखानि ॥

निन्दित योग—

रवि मङ्गल मे नन्दिका,  
भद्रा मे शुक्र चन्द्र ।  
बुध मे जया गुरु रिक्ता,  
शनि पूर्णा अति मन्द ॥

दम्भ तिथि विचार—

शेष कर्क केर पट्टी होई,  
धनुष मीन द्वितीया जोई ।  
वृष कुम्भ चतुर्थी जान,  
अष्टमि कन्या मिथुनहि मान ॥  
शुक्र सिद्ध दशमी भान,  
मकर तुला मे द्वादसी गान ।  
एहि विधि तिथि के दम्भा कही,  
शुभ कारज सब छोदि रही ॥

—सत्रह—

तारा विचार—

जन्म नक्षत्र सँ इष्ट नखत्रा,  
गणना केरि धरि देखिय पत्रा ।  
जाबत अंक एकटा भेल,  
तकरा केँ भव सँ भञ्जि लेल ।  
शेष धौचप से तारा जान,  
कहए "डाक" नाम गुण फल मान ।

तारा नाम विचार—

जन्म सम्पत्ति विपत्ति अरु रोम,  
प्रचरि साधक बध सुनु नेम ।  
मित्र ओ अति मित्र तारा नाम,  
"डाक" कहि फल के धाम ।

चन्द्रफल विचार—

जन्म राशि सँ गणना करी,  
ओहि तत्त्वक चन्द्रमा धरी ।  
याबत अंक आवै ई विधि,  
चन्द्र ज्ञान जानी एहि सिधि ।  
चारि आठ बारह के त्यागि,  
शेष चन्द्र शुभ कहिहूँ लागि ।

प्रतवार्य धरमे प्रवेशक समय—

रोहिणि श्रवणा सूर्य नक्षत्र  
शुभ वासर पैसी देखि पत्र ।



—अठारह—

कुलित योग ने जन्मक मल—

रवि रवि मंगल तीन तेजा  
श्रवण धनिष्ठा श्री अश्लेषा ।  
ओहि राति जे बालक होय,  
मात पिता संहारथ सोय ॥  
आष नरे कुल भरि संहार,  
राशि गुनैत काभन के सार ॥  
लग्नहि कुजा लग्नहि सुता,  
लग्नहि होयए भातु तनुता ।  
की नर जननी की नर बाप,  
की ओ जातक आपनहि आप ॥

श्रुतीक स्नान समय—

अनुराधा अधिनी ध्रुव हस्ता,  
स्वाती पौष्णा नक्षत्रे रास्ता ।  
कुज रवि शुक्रदिन करी नहान,  
कहथि “डाक” प्रसूती के जान ।

स्नानपात्रक दिन—

रिक्ता मंगल ओहि के धिष्टी,  
व्यतीपात वैधृत असि दुष्टी ।  
गुरु ध्रुव शिव नक्षत्रे जान,  
कहए “डाक” माताक स्नान पान ।

—उन्नीस—

प्रथम क्षौर (मुंडन) क समय—

चहि गुरु शुद्धि वेद प्रकार,  
शुद्ध समय के कर ने विचार ।  
विषम वर्ष उत्तरायण जानि,  
चैत छाहि शुभवासर जानि ॥  
जन्म भात के दीक्षए रयानि,  
व्योतिष उक्त नक्षत्र लागि ।  
आदि क्षौर बालकेर होय,  
“डाक” कहथि जानव सब कोय ॥

कर्णवेध—

जन्मक तारा जन्मक चन्द्र,  
जन्म रास ओ जन्म ग्रहेन्द्र ।  
दक्षिणावन ओहि जानी शुभवार,  
सूर्य शुद्धि केर करी विचार ।  
अधिनि पुण्य हस्त अरु अभिजित,  
मृग अनुराधा रेवती चित ।  
स्वाती हस्त ओ उत्तर तीन,  
विषम वर्ष कनछेदक दीन ॥  
शुभमईसे शुभ लग्न सुकाल,  
शुद्ध समय लेल “डाक” बेहाल ।

—बीस—

खड़ी धरवाक—

सौम्याचन शुभ कालहिं जानि  
पौषम वर्षमे खड़ी आनि ।  
गणपति विष्णु सरस्वतीमा,  
पूजन कर शिशु आचर कामा ॥

उपनयन—

गवर्माष्टम चाभन के काल,  
एगारह वर्ष क्षत्री केर लाज ।  
चारहम वर्षे वैश्य केर बाल,  
अनुष्य समय हेतु राजर्षि वेदशाल ॥  
सोलह बाइस चौबीस पर्यन्त,  
क्रम सौं ब्राह्मणसंविधीकन्त ।  
वर्ष शुद्धि कह "डाक" गोआर,  
पौष सौं सातहूँ करी विचार ॥  
गकर कलस सखली अरु भेष,  
वृष मिथुन मे भरु ब्रत भेष ।  
द्वितीया तृतीया पंचमी शुभवार,  
दशमी एकादशि द्वादशि आर ॥  
सन्ध्या गलामह अन्ध्या त्याग,  
कुण्डलपत्र श्री ग्रहणक भाग ।  
शुभ दुर्ग के शुद्ध करि जानि,  
धर्मशास्त्र सँ होष बखानि ।

—एकैस—

आद्रा श्लेषा जेष्ठा मूल,  
रोहिनि एतत्त तीन समतूल ।  
मृग चित्रा रेवति अनुराध,  
हस्त पुष्य अश्विनि ब्रत साध ॥  
दिति त्यागि मीनू पूर्वा जान,  
"डाक" कहथि उपनयनक भाव ।  
अचर पुनर्वसु स्वाती,  
कहथि "डाक" उपनयनक पाती ॥

अथ गृहस्थ प्रकरण—

संमुख दक्षिण दीप नहि हो,  
कहथि "डाक" एक मुक्ति हो ।  
मामा फावण जेठ अषाढ़,  
कन्या विवाही कहथि गोआर ।  
रोहिनि रेवति मूल ओ स्वाती,  
मृग मघा अनुराधा नाथी ।  
द्वितीया, तृतीया पास एगारह,  
विधि के उत्तम जानि विचारह ॥  
पन्द्रह तीस चौदह नौ चारि,  
त्यागि मध्यम कह शेष गोआर ।  
रवि कुम्भ शनि वासर के जोड़ि,  
अधपहरा भद्रा के छोड़ि ।



—बाइस—

दग्धा तिथि मासान्तहि त्यागि,  
करी विश्राह शुभ शुभ कैं जागि ।  
जो कन्या नहि रखवा योग,  
शुद्ध जानि कह विवाह सुभोग ।

बधू प्रवेशक समय—

करी विवाह दिन सोलह मध्ये,  
विषम मास श्री वर्षहि साध्ये ।  
हस्त आदि कैं तोनि नखत्ता,  
मघा द्वाद शुभ पुन्य धनिष्ठा ॥  
भयणा उत्तर मूल अनुराध,  
अरि रेवती बधू प्रवेश साध ।  
गुरु शुक चंद्र शनीचर दीना,  
कह्यो "डाक" बधु प्रवेशन बीना ।  
आठ पाट बारह बुधवार,  
रिखहुँ स्वांगी कह्यो गोआर ।  
शुक सूर्यक दोष नहि लाग,  
चन्द्र तार बलहुँ कैं स्वाग ।

द्विरागमन—

विषम वर्ष घट अलि छो मेघ,  
मिथुन क रविणें दूरागमन देख ।

—तईस—

महु भूव क्षिप्र चर ओ मूल,  
शुभ वासरने करि सप्ततुल ॥  
रवि गुरु शुद्ध जानि कैं कही,  
दक्षिण संमुख शुक छोड़ि रही ॥  
शुक पक्षमे करिआह जानि,  
"डाक" कहै अथि समय बलाहि ॥

शुक्राश्वता कथन—

रेवती सौ सुगतीरा पर्यन्त,  
यावत दिन धरि चन्द्र उगन्त ।  
तत दिन शुक अन्ध भयजाथि,  
वर दूरागमन करैल जाथि ॥  
संमुख दक्षिण कह्यो "डाक"—  
संमुख शुक पीठ दीश बुध,  
देहना समर्थ देखगुरु शुद्ध ।

डीह गुनधाक—

करत समान नापि कए काठी,  
दीर्घ भ्रमान जायि कए वाँटी ॥  
एके हाइ दूजे चमार,  
तीनैं विप्र चौठे शूद्र ।  
पाँचें सम छठे जूनी,  
सातें योगी आठें पुन ॥

—चौबीस—

झाड़ी पहिरावण साड़ी,  
चमार लय जाय काड़ी ।  
विप्र विचित्र आनीचो,  
शूर बहुत धन देवो ।  
राम पद्मीचो रोगी,  
तुर्ची करीचो भोगी ।  
योगी करण अन्नदूता,  
पूना करी ओ सून ।

डीह पर वारवुंक—

अचर दोशुन चौशुन माझा,  
पूछो कन्था नामक वार्ता ।  
गामें नामें एक करी,  
तासे सावे भाग धरी ।  
वेरि वेरि छठचो पव्हइ मोरे,  
भेलो वितल पलट्टे तोरे ।  
एक शुन्य जो पाचए चारी,  
छावइ नाम कि होवए मारी ।  
तीजें पाचै गात सुमान,  
कड्धि "डाक" ई गाम प्रमान ।

पर शुनवाक—

एक धरेंक हीजे धगवान, पांचे होइ पुत्र कलवान ।  
सावे सहा पदारव सिद्धि, कहए "डाक" जे एहि पर विधि ॥  
(पाठान्तर)

—पचीस—

गामें नामें डोह एक करी,  
तामे आळें भाग धरी ।  
घर आळन कविअह जानि,  
ई कहै अछि "डाक" वखानि ॥  
पची वसु पञ्च मजारे,  
पट केसरी श्वान सर चार ।  
अहिपर सात इन्दुसर एक,  
गज सर तीन वेनु सर मेघ ॥

वेरिमिअ कथन—

पत्तिराज केसरि जो संग,  
साप श्वान कें दोवर रंग ।  
गज मजारे हो अपलि,  
मेघ श्री मुखहि बहु सम्पत्ति ।  
पची नाम करत संहार,  
वन बिलाइ मूखा के मार ।

कोन यहक दशा ने वरवनआले कोन फल—

रविक दशा जो करी घर,  
घरनी राजा मगडा कर ।  
सोम क दशा जो करी घर,  
दूधे पूते भरी घर ।  
मंगळ क दशा जो करी घर,  
घोड़ा घोड़ी मनुष सर ।



—छःवीस—

शुभ क दशा जो करी घर,  
 बेटी बेटे भरस्य घर ।  
 गुरु क दशा जो करी घर,  
 अटुट लक्ष्मी आवण पर ॥  
 शुक्र क दशा जो करी घर,  
 खीर खाँड़ लय भोजन कर ।  
 शनि क दशा जो करी घर,  
 घर घरनी भरस्य पर ॥  
 राहु क दशा जो करी घर,  
 सकल गोष्ठी भरस्य पर ॥

पुनः—

रवि कर कहल धन शनिवार,  
 मंगल गरण कहल गोखार ।  
 बुध से धन बिहके हो सिद्धि,  
 शुक्रहि भोजन हो बहु वृद्धि ।  
 शनि हो रोग शोक औ हानी,  
 काल क दर्श गरण के जानी ॥

कन्या हाथ क ग्रह कर्तव्य—

गृहपति हाथ करव परमान,  
 जत चाकर दीर्घ गुनि आन ।  
 एक छाड़ि आठ सो हरव,  
 बाँकी रहत से लेखा करम ॥

—सत्ताइस—

फल—

एक अनेक तिथि धनधान,  
 दीर्घ पुत्र होई फल मान ।  
 सात सकल मनोरथ पूर,  
 कहत “हाक” घर यदि विधिकूर ॥

सूर्य मंडल, चन्द्र मंडल विचार—

दीर्घ चाकर सन जो होइ,  
 रवि मंडल कह सब कोइ ।  
 मंडल चन्द्र विविध सुख दाइ,  
 उत्तर दक्षिणे दीर्घ जो भाइ ॥  
 घर आछन चितु जो करइ,  
 पुत चित्त चित्त सबहु के हरइ ।  
 सोधहु हस्त ऊँच नहि कीजए,  
 “हाक” कहति जे दिनदिन बीजए ॥

वास्तु खोल लेखन दिव—

आदि भादव पुष्य शीश,  
 दक्षिण पश्चिम उत्तर दीश ।  
 तिनि र सास विचारि भाग,  
 बाय भाग सुवधि नाग ॥  
 जत भूमिक घर करी,  
 शिरम दीश सो छौ भागधरी ।

—अष्टादश—

दूई भाग शीर दीशक त्वागि,  
एक भाग पुच्छहुँ केर लागि ॥  
दूनु भाग जे राख्य में रह्य,  
खात कर ई "डाक" कह्य ।  
एक हाथ क खात करी,  
'डाक' भने पूजा कय गरी ।

घर छरयवाक वचन—

राजा युधिष्ठिर मन्दिर छावा,  
सौलह सहस्र ऋषि बुलावा ।  
हे ऋषी दृग पृथ्वी तोही,  
घर छावन विधि कह्यो मोही ।  
कहहि "डाक" पड़िवा भति छावहुँ,  
बल सँ कलह फाल जगावहुँ ।  
दुअ दशमीते बहुफल होई,  
सकल मनोरथ पुरवै सोई ।  
तीज प्रथोदशि करिय न बासा,  
तोघर होवय भोग विछासा ।  
बौठि चतुर्दशि छावन छानी,  
ताघर होयत बालक हानी ।  
पाँचै राते तिथि आभावा,  
गाय महिसि धुरन्धर बाग्धा ।  
छठि आवैं छावन नर जोई,  
स्त्री भरय बहुत दुख होई ।

—उन्तीस—

नवमी कह्य इअह व्यवहारा ;  
सो नर खइनें सदा उधारा ।  
एकादशी द्वादशी छावन जहिआ ,  
ता घर फाळ भुजंग मरैआ ॥  
दशे पुरुष की दशे नारी ,  
सो घर रहिये सदा उजारी ।  
कहहि "डाक" जौ तिथि भहि गानी,  
ओरिसैं घर बर वैशि गमावी ॥  
पन्द्रह तीसैं छावन छानी,  
ताघर होयत राजा कै हानी ।

घरक समीप अशुभके वृक्ष कथन—

सिमरि तेतर ओ पुनि तार,  
तुवि दूमरि अरु बट विस्तार ।  
जामून अडिरी गाछ गौ होए,  
"डाक" नाशए पुनि सोए ।

शुभाशुभ वृक्षक फल—

सदन समीप नारिअल होई,  
गृह बहूत धन पावए सोई ।  
घर क ईशान पूव ओ पावए,  
ताके घर बहु पुत्र बढ़ाय ॥  
पूरव दिशा आम यदि होय,  
धन दायक 'डाक' कहए सोय ।



—तीस—

बेल पनस बदरी अरु गेहू,  
 पूरव रहने प्रजा बड़ थेनू ।  
 इपह सब वृक्ष दक्षिण जो होय,  
 अन्न धन लक्ष्मी थड़ावण सोय ॥  
 जामुन दाड़िम पूरव आशा,  
 बन्धु बहुत ताके पर नासा ।  
 पर के दक्षिण इपह तरु जो होय,  
 ताके बहुत मित्रकर सोय ॥  
 दक्षिण पछिम पूगी होय,  
 ताके बहुत हथ सोय ॥  
 जो ईशान दीश ई तरु होय,  
 प्रजा बड़प बहुत सुख होय ।  
 चम्पा तरु पूरव जो होय,  
 अन्न धन लक्ष्मी बड़ होय ।  
 तुम्बीफल अरु कर्कोर,  
 कुम्हड़ भण्डा सब दिश चार ॥  
 लता समीप सदन के होय,  
 कबहुने दुष्ट थड़ावण सोय ।  
 वनमैम्हार जे होय अनेक,  
 बिटपने रोपीअ करी सबिधेक ॥  
 सदन समीर बिटप बट होय,  
 धन ताके तस्कर नित खोय ।

—एकतीस—

सोई तरु पुनि नगर मन्हार,  
 ताहि सुखद कह "डाक" गोआर ॥  
 घर समीप समीर दुख भूल,  
 तेतरि नाशप धन केर भूल ।  
 पुत्र नाश करी भीख मँगावण,  
 सबनो कहिओ सुख ने देखावण ॥  
 सिरिस अशोक कदम्ब सुखदाई,  
 हरदी अबरख परम सोहाई ।  
 हड़ीइ आओर आमल कीदोऊ,  
 शरक वृद्धि ताके घर होऊ ॥  
 आगो केदली पाछो मान,  
 बनिता बैसवि सौंन दलान ।  
 पूरव सुतधि पीड़ा पादि,  
 एकतर की कर गुत्ती बिलादि ॥

रथाथ वस्तु—

गोड़कट खाट घटकन छाड़,  
 बारि कुलच्छनि चाकर चार ।  
 ई चारु कें तुरंत परिहरी,  
 तुम्हा बाढ़ि फकीरी करी ॥  
 शनि रवि फड़की गंगल खाट,  
 ई तीनु ताकए स्वर्ग क बाट ।  
 कपटी मित्र कोशलिआ माय,  
 बुद्धिबक चेटा टेडा जमाय ॥

—वत्तीस—

कइहि "डाक" बारु परिहरी,  
बुझिबक सन शशुरी नहि करी ॥  
महुतम सौं सेल बहिधा वरी,  
कहुधि "डाक" जे सत्तापहि मरी ॥

सत्यैस क प्रसंग—

खयलहुं मरी चितु खयलहुं मरी,  
कहुधि "डाक" जे सत्यैस करी ॥

॥ इति गृहस्थ प्रकरण ॥

००००

—लेलीक प्रकरण—

बड़द लेबाक प्रसंग—

धुरि धुरि आ दीपक बर जमा,  
बारह वर्ष बड़द रह तहामा ॥  
नादा बड़द बेधि कए,  
दूई धुरन्धर कीन ॥  
अपन खेती करि कए,  
आनके मँगनी दीन ॥

नादा बड़द बड़रिआ जाई,  
नहि घर बसाए न खेती होई ॥

—तेलीस—

हलचक—

जानि न खता रबिकर बासा,  
नासौ तीनि दिखी हरतासा ॥

बुपभ बिनाश उपजए नहि धान,  
पटाएव कि अन्नन्ध किसान ॥

लगना तीनि उपज नहि बास,  
बहु विधि लाभ पंच कह आस ॥

पलधा कीनि तीनि कइए अन्नन्ध,  
तीनि भेडादेव सभ सौन्दर ॥

करहा जीनि उपज नहि धान,  
जोएष राई जे आन किसान ॥

पड़िया बहे धुरन्धर छति आठे हर जाय,  
चौरह चौठि अमावस अयलो हर विठाय ॥

साते पांचे तिथिया दशमी एकादशि मे जीब,  
एहि तिथि हरके जोतिण ताहि प्रसन्न हो सीब ॥

स्वारी हउ पू पू तेऊ लुगु चंगु बार कहेउ,  
एठपासा विधि हेऊ खेती करवाक "डाक" फहेउ ॥

बुध दरबार, विहफे बीज, शुक्र हर जोतबह नीज ॥



—चौतीस—

साहि नखत्रा ज्यौ सूर,  
सासो आठ परिहर दूर ।  
बारहम सोइहम बीसम बारि,  
शेष नखत्रा परिहरि चारि ॥  
सर्व युक्ति सौ जाणव खेत,  
उत्तर दोश सैं धरव सचेत ।  
बड़दा जोतव ठीक (ठाढ़) कप,  
लागन धरव हड़ कप ॥

बड़दक चेष्टाक फल—

बड़दा मूले खेत बड़ाप,  
खसै खेत जौ बड़द पड़ाप ।  
गोड़ा भाड़की मुड़ाभाड़,  
तौ नहि नीक जौ खसै फार ॥  
ईशा दूटप सून हो कोर  
लागनि दूटप बड़द छप चोर ।  
जूथठ दूटप तौ शुभ होप  
जौ बैसे कुदे लादे गोप ॥  
तत जानी कृपी भल होव  
"डाक" कहै छथि निश्चित सोव ।  
खुर सिंह सौ माटी लीप  
बहुत सुख की मानहि दीप ॥

—पैंतीस—

खेत जोतवाक—

ऊँचे नीचे करी बास,  
भाई भतीजे करी बास ।  
से छाड़ि कप करह पचास,  
बड़दे कटतहु बड़दक पास ॥

थोड़क जोतिह ऊँचक मइयविशह ऊँचक बग्गिहह आदि ।  
जौ खेत तैजो नहि धपजहु "डाक" कैं पहिह नाहि ॥

छोट छोट घर बान्ही चौघरा,  
नामे फार जोतवाची हरा ।  
थोड़े थोड़े बेथि क किनथि भाड़,  
ताहि घर लक्ष्मी खल खल नाच ॥  
सौ छाड़हुँ अरु करह पचास,  
नीच ऊँचक जोतह चास ।  
नितह खेती दोसरक गाय,  
जे नहि देखथि तकरे जाय ।  
घर पैसल जे बनवथि बाप,  
देह मे बख ने पेट मे भात ॥

धान जोतवाक—

पुण्य पुनइवसु पैलिबह धान  
मच असरेसा काथी खान ॥

—द्वत्तीस—

रोपकाक—

काशी कुशी चौड़ी चान,  
आब की रोपवह खेत में धान ।  
भारे बोझा बोझे धान,  
आबहुँ बैसह घर किसान ॥  
आपहुँ रोपी तान वितान,  
सावन रोपी नविके धान ।  
भादव रोपी ककोड़ाक बान,  
तीनू काठी एक समान ॥  
बापे पुत्ते करी चास, बापक मुहलें भाइक आस ।  
आनक संगे करी नै चास, नै हो शत्रु नै गाभरि चास ॥  
(इति सामान्य प्रकरण)

००००

वर्षफल

साओन कृष्ण एकादशीक—

साओन कृष्ण एकादशी,  
रोहिनि जेतो होय ।  
सेतो समया जानिए,  
खड़ी घसए नहि कीय ॥  
तिथि बढ़ए तो धान नशावए,  
नत्तन बढ़ए तो धान उपजावए ।

—सैंतीस—

तिथि नत्तन होयए समतुल,  
बुद्धिमी उपजए तुलन तुल ॥  
कृत्तिक होयतहु कटिमाटि, रोहिनि होय सुकाल ।  
जौं सुगहिरा आबि पड़ए, पड़ए अचानक काल ॥

साओन शुक्ल सप्तमी—

साओन शुक्ल सप्तमी,  
धूपिके ऊपरहिं भानु ।  
ती छनि मेवा धरिसए,  
जौं लनि देख बटाव ॥  
साओन शुक्ल सप्तमी,  
रेनि होहिं नसिहारि ।  
कहए "छाक" सुन भौंछरी,  
पर्वत उपजए सारि ॥  
कर खेती पिया भवन मे,  
होय निचिन्त रह सोच ।  
साओन शुक्ल सप्तमी,  
रिमिक्किमि धरिसए बारि ।  
सुतहु पिया निचिन्त भय,  
बन्हए ने सारिक बारि ॥  
साओन शुक्ल सप्तमी,  
जौं धरिसए धराव ।



-बटतीस-

ना लनि मेधा बरिसहि,  
पुहमी धूरि मेदाय ॥  
साओन शुक्रा सप्तमी,  
छपि केँ उगधि भानु ।  
मूसिन पूरव मूस सँ,  
कहाँ करव खरिदान ॥  
साओन पड़था सादव पुरवा,  
आशिन बहए ईशान ।  
कातिक कता सिक्किओ न डोलय,  
कहाँ के रखवह धान ॥  
साओन पड़था बढ दिन चारि,  
चूल्हक पौड़ा उपजए सारि ॥

साओन शुक्रा सप्तमी, जेँ गजें आशाराव,  
तेँ जाहू पिआ सालवा, हम जाइव गुजरात ॥  
साओन शुक्रा सप्तमी, ठह ठह रैन करन्त,  
की जल भेटए गंगतट, की तिय कूप भरन्त ॥  
साओन शुक्रा सप्तमी, लुक दय उगए सूर,  
हाँकिहु पिआ इरवा बरदा, वर्षा गेल बड़ी दूर ॥  
साओन शुक्रा सप्तमी, निम्नल चान उगन्त,  
की जल मिलए समुद्रमे, कागिनि कूप भरन्त ॥  
साओन शुक्रा सप्तमी, मेघन छाजए रैन,  
कहहि "डाक" सुन "भाँडरी" वर्षा हो गेल चैन ॥

-उनचासी-

साओन शुक्रा सप्तमी, गगन स्वच्छ जेँ होय ।  
कहहि "डाक" सुन "भाँडरी", पुदमी खेती होय ॥  
कंकड़ भीजहि कंकड़ी, सिंह उवारय जाए ।  
कहहि "डाक" सुन "भाँडरी", कुत्ता अन्न न खाए ॥  
कंकड़ सुखहि कर्कमे, भीजए सिंह सिआए ।  
अन्न महगता मे कहहि, सुन्दर "डाक गोडार" ॥  
आदि ने बरिसव आदरी, अन्न ने बरिसव सिदान ।  
कहहि "डाक" सुन "भाँडरी", किसान होयत पिसान ॥  
सोम शुक्र शर बीफे बार,  
बुध अमावस पूस भगार ।  
खेती कय नर सोवहुँ जाय,  
उपजए अन्न हर्ष सहि छाज ॥  
रविश रवि सुत ओ अंगार,  
पूस अमावस कहल "गोबार" ।  
मूल विशाखा श्रवणा पुरवा,  
ई जेँ होय अमावस परिषा ॥  
अपन अपन घर चेतहु जाए,  
रत्नक मोलें अन्न बिकाय ॥

शाके सम्बन् वर्षा विशा, जोड़ि करी एक ठौर ।  
सातक भागे भाजिए, जे किछु बाँचए और ॥  
एक छद्मे सम करि जान, सुन पड़य तेँ काल पखान ।  
जेँ बाँचए दूई चारि, महगो अन्न बेशाहे भारि ॥  
धीनि पाँच जेँ बचि जाव, हाँटिक मोलें अन्न बिकाय ॥

—चालीस—

पश्चिम बहए नृशहिँ सपजावए,  
सम्पत्ति प्रजा बहुत तब पावए।  
उत्तर बहए धान्य बहु होई,  
ईशान अनावृष्टि कर सोई ॥  
शान्तियार जौँ रवि परवेश,  
धान नाश कर उजड़ए देश।  
मंगल दिवस अग्नि भय होय,  
गुरुवारहिँ पुरहितहिँ खोय ॥  
बुध परिवेश वृष्टि बहु होय,  
शुक्रहिँ अन्न बढ़ायए सोय।  
रवि अरु सोम प्रजा दुख पावए।  
परिवेश क फल "डाक" इएह नावए ॥

रवि कुज शनिहो संक्रान्ति, राजा अग्नि चोर भयमौति।  
बुध चन्द्रहिँ जौँ हो संक्रमन, सस्तीकरवान शोभीतजन ॥  
शुक्रशुक्रवासर जौँ हो परवेश, धन्य वृद्धि सौँ "डाक" न कलेश।  
दिनमे मेष रातिमे तारा, बहए "डाक" जे पष गेल मारा ॥  
शनि मंगल जौँ हो शिवराशि, पड़वः बह जौँ दिन ओ राति।  
बोझा रोझा टिड्डीजौँ उड़ए, राधा मरण की परती पड़ए ॥

जाही होवए देश वेदा, ताहि चुमावी नाय।  
ताही होवए दोलाधोली, पुहसी करत खोटाए ॥  
रवि शनि मङ्गल धारक, स्वाती नञ्ज जौँ होइ।  
दीप मालिका ताहि दिन, छत्र भंग फल जोइ ॥

—एकतालीस—

गर्भ अवश बहु तियक, पर्वतहुँ गिर जाहिँ,  
बुद्ध उपद्रव बहुत विध, रोग बहुत तब माहिँ ॥  
खाती जौँ दीक्षा बरए, बिराखा खेड़ए गाव।  
नर अवश्ये जू भयें, अन्न सहस्र भए जाय ॥  
दीप जलए खाती दिन, गोधन होए बिराख।  
निश्चय जानहु "डाक" कहह, नाशय उपजय शाख ॥ पाठान्तर  
फागुन पूनी दिवस मे, होली दाह जौँ होय।  
वायु बहन के फल कहह, परत बिचारे सोप ॥

पुरिवा बहए परत मुख पावए, राजा के मन मोद बढ़ायए।  
दक्षिण बहए परत दुखदाह, उजड़ए प्रजा महगी भहिँ दाह ॥  
पच्छिम पवन बहए यदि सुन्दर, लगय प्रजा भरिपूर वसुन्धर।  
पवन पूर्व यदि बहए सुहाई, किछु वर्षा किछु रौरी जाई ॥  
वायु दक्षिणी धनकर नाश, धान नष्टकए उपजय घास।  
उत्तर पवन बहए कदिलागिन्न, पृथिवी पानी अनरय पाड़िअ ॥  
"डाक" कहए यदि चारु वायु, नृपति प्रजा सब जीव जरायु।  
बहए वायु अकशे आए, महि सर्वत्र संश्राम कराए ॥  
मास अषाढ़ पूर्णिमा गमना, ध्वजा बान्हि के देखह पवना।  
पूर्व सौँ जौँ वायु चलआवय, उपजय धान मेष भडिलावय ॥  
दक्षिण सौँ बह मलयानीज, मध्य समय जूकर बलधीर।  
पड़वा बहए नीक कय जानव, अति उरलास किछुए भय मानव ॥  
उत्तर सौँ उपजए धन धान, धान प्राय सब खाय किसान।  
जौँ ई ध्वजा रहए ब्रह्मण्डा, पड़ए अकाल होलाए सब खण्डा ॥



बुद्ध राजा मन्त्री कान, अन्नक सुखें चलत उतान । (सुतत्र पा०)  
शनि राजा मंगल मन्त्री, नहि हो धान ने होयप यन्त्री ॥  
एक शनि छथो गरुड भोग, ताहि बध बहु पीड़ा रोग ।  
कहए "डाक" ई गोलक योग, युक्तक कारणा इन्द्रहुँ काँ मोल ॥  
चैत त्रयोदशी शनिक योग, नहि हो अन्न "डाक" केँ भोग ।  
पाँच सूरजहिँ मास तुलाय, ताहि वर्षमे "डाक" लजाय ॥  
की अति रौंदी की अति वृष्टि, की अति लय अति मङ्गल सृष्टि ।  
फाल्गुन मंगल होय पाँच, पुसहुँ मे पाँच कुवड़ा (?) नाच ।  
काल पड़ए तेहि सालहिँ घोर, "भौंड़री" सुनइ बात मोर ॥

(१) कुवड़ा = शनि

इति वर्षकल

## अथ वर्षा प्रकरण

मेघनर्भ

पूसक अन्हरिआ जलदिन मेह, साओन सुदि ततदिन जलदेह ।  
माघ सुदि जत दिनमे जान, साओन ततदिन वर्षा मान ॥  
माघ बदि से मेघ देखाय, भादव सुदि तत वर्षा आय ।  
फाल्गुन सुदि जौँ बादर देख, फागुन सुदि से "डाक" लेख ।  
चैत सुदि जौँ मेघ लाग, आसित धरि कातिक सुदिमे भाग ॥  
जेठ सुदि अष्टमी सँ देख, चारि दिन मन्द धासुक लेख ।  
नगन सुन्दर घन देखल जाय, मेघने गर्भ कइहु "डाक" बुझाय ॥

दशतारक

मूल आदि भरणी केर अन्न,  
चन्द्र वारतँ गर्भ कइन्त ।  
कारी वटा गगन से छावए,  
बहए पवन जौँ वृष्टि नहि लावए ॥  
ओ दशतारक नीक कहावए,  
बर्षा कसकेँ अन्न बढ़ावए ।  
जौँ दशतारक वर्षा होय,  
पुहमी घुरि लोटावए सोय ॥

मास विचार

कातिक सुदि एकादशी, बिजुली मेघ होय ।  
"डाक" मास आपाड़ मे, अति वर्षा जल होय ॥  
शनि रवि मंगलवार केँ, कातिक अमावस होय ।  
आयुष योग पड़ए पुनि, स्वाती तत्तत्र जौँ होय ॥  
काल पड़ए तेहि दैशमे, अरु, बड, लोक नसाय ।

कहत "डाक" सुन "भौंड़री", तुरहुँ सगुन इष्ट आय ॥

कातिक सुदि पुतेकँ भौंड़ी, नक्षत्र कृत्तिक जौँ पड़ि जाह्यौ ।  
तायिन हो संयोगहिँ बादर, पुनि पुनि बिजुली चमकय सादर ॥  
मास चारि वर्षा केँ सुनइ, भलीभाँति वर्षे मन सुनइ ।  
कातिक मास जौँ द्रसे मेह, जयदिन ताकर सुनहुँ खेह ॥  
सो मेघ बरिखए आपाड़, सुन "भौंड़री" कहए "डाक" गोआर ।

अगहन यदि तिथि अष्टमी, जो मेघ दर्शत ।  
 ओ मेघ साओनि भरि, कह्य "डाक" वर्षत ॥  
 अगहन यदि एकादशी तिथि, द्वादश कतिक राति ।  
 पौष पंचमी आर सुनु, माघ मासमे सति ॥  
 ईसव दिन यदि मेघ देखी, चारि मास वर्षी अति पेली ।  
 पौष अमावस यदि पड़्य, सोम शुक्र गुरु दिन ।  
 जल वर्षय बहु अल हो, प्रजा सुख हो रित ॥  
 पौष अमावस यदि पड़्य, शनि रवि मङ्गल वीन ।  
 "डाक" अन्नमहगी होय, जलविनु तलकय मीन ॥  
 पौष इजोड़िआ सप्तमी, अष्टमी नवमी वाज ।  
 "डाक" जल देसय प्रजा, पूरय सब विधि काज ॥

पौष वदी सप्तमी तिथि नौही, विनुजल बाइल गर्जत आँही ।  
 पूनो तिथि साओन के मास, अविशय वर्षी राखहु आस ॥  
 पौषवदी दशमी तिथि नौही, जो वर्षय मेघा अधिकाँही ।  
 तो साओन यदि दशमी, दरसय, ओ मेघ पुहमी बहु वर्षय ॥  
 रविआ रवि सुत ओ अंगार, पूष अमावस कहल "गोआर" ।  
 अपन अपन घर चेतहु जाय, रतनक मोल अन्न विकार ॥

पानी वरसय आधा पूल, आधा गेहूँ आधा गूस ।  
 पौष अमावस तिथि विषय, होय मूल नञव ॥

बारु वायु बहय पुनि, सुनले हओ गृहस्त ।  
 जौओ अपनी ओपड़ी, निश्चय हो मनमान ॥  
 वर्षी अविशय हो मही, कह्य "डाक" परमान ।

माघ वदी सप्तमी के ताहि, जो विनु जल दान नग माहि ।  
 मास बारहु वर्षे नेह, मत सोचहु चिन्ता तजि देह ॥  
 माघ सुदी पहिवा के मध्य, दमकय विनु गरजय बह ।  
 तेल अरु सुरही दिन-दिन भार, महगी होय "डाक" गोआर ॥

माघ वदी तिथि अष्टमी, दुसरी पूष अन्हार ।

"डाक" मेघ देखी दिना, साओन जल अपार ॥

माघ (१) बरिसय तीनिलय, गेहूँ गाव धेमाय ।

माघ द्वितीया चन्द्रमा, वर्षी विजुली होय ।

"डाक" कहथि सुनइ नृपति, अन्नक महगी होय ॥

माघ तृतीया सूदिमे वर्षी विजुली देख ।

"डाक" कहथि आओ गहूँस अति, महय वर्ष दिन लेख ॥

माघ सुदीक चौथमे, जो लागय घन देख ।

महगी होय नारिअल-रहय न पानहि रोष ॥

माघ पञ्चमी चन्द्र तिथि, बहय जो उत्तर बाव ।

तो जानहु भरि भाद्रमे, जल विनु पृथिवी जाय ॥

माघ सुदी पछी तिथि, यदि वर्षी नहि होय ।

"डाक" कपास महगी, मिलय राखय ता नहि कोय ॥

माघक गरमी जेठक जाइ, पहिला पानी भरि मोल ताल ।

कह्य "डाक" हम होयव योगी, कुआँक पानीय धोय घोवी ॥

सोभवार दिन यदि पड़्य, माघ सुदी तिथि सात ।

"डाक" नृपति सँह युद्ध तार्हि, प्रजा कोल मुखजात ॥

अन्न महय जानहु हे भील, माघ मासमे खसय न सील ।

(१) माघक वदरी तीति खाए, गाव गहूम धेमाय । [पाठान्तर]



फागुन सुदि तिथि पञ्चमी, शनि मंगल दिन होय ।  
“डाक वर्ष” महुनी पड़ए, बीज न छोडय कोय ॥  
फागुन अमावस मंगलवार, अन्न संयोगे मनहि विचार ।  
अवस अकाल पड़य तेहि वर्ष, कहए “डाक” तेजहु मन हर्ष ॥  
शुद्धि फागुनक सप्तमी, नवमी तिथि अरु अष्टमी ।

ता दिन मध्या जेँ मेघा गजें, तो अकाल जानहु तू सर्वे ॥  
चैत मास यदि तपस्य जाए, नहि मेघ नहि बिजु देखिए ।  
यहए न वायु अँधेरी पाख, ताकर भल हमि “डाकहि” भाख ॥  
समय होअ शुभ वर्षा होए, राजा प्रजा सुखी सौँ सोए ।  
चैत अँधेरिया पड़िवा देख, जौन बार ताकर फल लेख ॥  
रविवार तेँ औंधी बहए, मंगल बिमल बुद्धि कहए ।  
बुधवार हो काल जवाबए, शनिवार बहु बिपदा लावए ॥  
सरवर नदी कूप नहि पानी, मानुष चौपद मृत्यु बखानी ।  
हाहाकार सकल दिश जानू, शनिवार के इएइ फल मानू ॥  
चन्द्र शुद्ध बृहस्पति बार, दुध आन्न से भरे भण्डार ।  
चैत्र वदी पड़िवा फल इएइ, सुनलहु जा “डाकहि” कहइ ॥

चैत्र सुदि अष्टम नवम, वर्षा बिजुली जोए ।

जा दिशि अइसहु देखहु, ता दिशि काल पड़ाए ॥

चैत अमावस पत्रा देखहु, सूर उदय से जे पड़ी पेखहु ।  
ते ते सेर बिकाही धान, कातिकमे “डाक” बखान ॥  
चैत मासक दशमी सुदी, बादर बिजुली देखहु यदी ।  
जाकर फल इएइ नोक होए, एहि बिहस फल शुभ लेहु जोए ॥

वैशाख

बादर जेँ वैशाख मे, देखि पड़य पचरद्व ।  
अथवा मेघा वर्षही, चमकए बिजुलीके सज्ज ॥  
तो चौमासा वर्षही, मेघ मही पर जान ।  
साँखोन मे उपजए घसो, नाज अनेक विधान ॥  
होहि अमावस जेँ शनिवार, अरु रविवारके करहु विचार ।  
छत्र भंग राजनके होई, “डाक” अवल देखा सब कोई ॥  
सुदि वैशाख एगारह बारह, अरु तेरह जेँ बादर झारह ।  
अरु बिजुली चमकए बहु ताहि, राज उपद्रव हो महि माँहि ॥

जेठ मास अँधियारी पाख,  
ता मह पड़िवा कर फल शाख ।  
चैत मास पड़िवा फल जइसन,  
“डाक” कहए एहु केर फल तइसन ॥  
जेठ वदी दशमी तिथि पेखहु,  
शनिवार के जेँ इएइ लेखहु ।  
वर्षा पुहमी पर नहि कोई,  
बिरले जगमे जीवए कोई ॥  
पौख वदीमे मेघा धमकय,  
अरु बिजु ता से चमकय ।  
बचय धोड़ चौपद बहु मरही,  
“डाक” एकर फल अइसहु भएही ॥

सूर्य आसा जहि ठाम, जेठ अमा सन्ध्या समय ।  
राखहुँ मनमे ध्यान, जेठ सुदी दुनिया तलक ॥

दुविआ के चन्दा उगए; रवि ते पश्चिम मन्द ।  
उत्तर ऊँचो होइकेँ, दक्षिण नीचो चन्द ॥  
उत्तम फल जाकर लखो, समय होई अति नीक ।  
दक्षिण ऊँचो अरु उत्तर, बीच "झाक" नहि ठीक ॥  
जेठ पूर्णिमा दिन मे, पत्नी लोटए पूर ।  
कहए "झाक" तेहि वर्षमे, वर्षा हो भर-पूर ॥  
जेठ पूर्णिमा रातिमे, मेघ भयानक होए ।  
किछु किछु पछ्या संहरए, महापृष्टि कर सोए ॥  
जेठ सुदि वृषीया गौहि, आद्रा ऋक्ष मेघ वर्षाहिँ ।

तेँ दुर्भिक्ष पड़तएहि साल, कहए "झाक" हो भना वैहाज ॥

भाय अन्हरिआ सप्तमी, जन विजुली इमकन्व ।  
द्वादश मास वरपय जलए, जटा कटा बहुसन्त ॥

जेठ मास जेँ सूर्य तपावए,  
उष्ण वायु बहु रजहिँ उड़ावए ।  
घनहुँ मेघ वर्षए महि माहिँ,  
जेँ पृथिवीमे नहिँ समाहिँ ॥  
जेठ मास जेँ तपए न सूर,  
शीत साधमे पड़ए न पूर ॥  
उपज थोड़, थोड़ जल होई,  
कहत "झाक" मानहुँ सय कोई ॥

आद्रादिक दशभूत, जेठ सुदी मँई जेँ वनए ।  
तेँ भागए दुर्भिक्ष, चारहुँ भास वर्षए घनए ॥  
जेठ अन्हरिआ शनि दिन, जेँ न साधमे होए ।  
पानि न बरिसए मही पर, "झाक" न जीवए कीए ॥

आषाढ़

बदि आषाढ़के प्रतिपदा, बदि मेघा गर्जन्त ।  
पृथ्वी पर मानव लड़ए, निहचे काल पड़न्त ॥

अकर वनल अपाढ़, तकर बारह मास ।

आषाढ़ बदि एक अकाश, गरजय विजु वायु प्रकाश ॥  
तेँ खेती करहु मति कोई, साओन भावहु सूखा होई ।  
रोहित हो दशमी तिथि माँही, तय हो सस्या धान बिकाही ॥  
सुदि आषाढ़ बुध के, शुक्र उदय यदि होए ।  
होय अस्त साओन विषय, महा काल पड़िओए ॥  
साओन बहए पुरवैया, वैशाख वरदा कीन्ह नैया ।  
चौठ अन्हरिआ साओन गौहि, जेँ महिपए मेघा वर्षाहिँ ।  
पैतालिस दिन घन बरसए, खाल सबाई बड़ए भन हरपए ॥  
साओन पञ्चमी बरिसए मेघ, चारिमास वर्षा नित नेह ।  
सबे सोदावन हर्षित नेह, "झाक" करी नहिँ किछु सन्देह ॥

साओन अनावस परहि जेँ, सामवार मे आए ।

उपज अन्न हो थोड़हि, दाहाकार भवाए ॥

फहुँ बरिसए कहुँ सुखहि, मरए जगत थहु लोन ।

फल आकर कह "झाक" इमि जएते वयोतिथ योग ॥



भादव सुदि पञ्चमी भौंहि, स्वाती रिज संयोग हो जाहिं ।  
दोऊ शुभजग मङ्गल करण, सुखी लोक सब कर दुख टरण ॥  
मादोमे भरणी जब होइ, घटाटोप मेघा नभ जोइ ।  
तब जानहु वर्षा सब देश, "डाक" सुखी जन मिटय कलेश ॥  
आश्विन अमावस हो शनिवार, खरबर समय होए विचार ।

दाक्षिण लौकातीकहिं, उत्तर चरजण मेह ।

कहहिं "डाक" सुन "भौंहरी" ऊँच कय किल्लादेह ॥

मेघ सिंह धनु आग्न करण वृष, कुम्भ कन्या साटी भिजए ।  
मिथुना तुला बह पचना, कर्क मीन वृश्चिक जल भरता ॥  
कालिक द्वादशि नेचाविशण, ताहि दिशा आपाव बरिसए ।  
अगहन पंचमी मेघ घटा, भरि साओन औन मेटा ॥  
पूस अमावस मेघाकार, बरिसए भादव धौआँ धार ।  
माघक सप्तमी मेघ बदरिआ, चार मास बड़जल धरिआ ॥  
ई सब आँ पको न देखय, मेघ रसातल मे चल जाय ।  
कहहिं "डाक" सुन "गौंहरी", मानुष कुपहिं पैसि नहाय ॥  
जौं मेघा जल बरिसए स्वाती, तौं लहीन पहिरय सोनाक पाती ।  
वेद विहित नहि होए आन, तुल धिना नहि फुटए धान ॥

सुख सुखराती देव उठान, तेकरे तेरहे (१) करह नवान ।

तेकरे तेरहे खेत खरिहान, तेकरे तेरहे कोठी धान ॥

पानी बरिसय आबहिं पूस, आधा गहुस आधा भूर ।  
माघक वर्षी जेठक जाइ, पहिला पानी भरिसेल माल ॥  
"डाक" कहथि जे हग होयवयोगी, कूपक जलसे धौएत धौधी ।  
(१) बारहे (पाठान्तर)

जौं पहिले वैशाख मे जल, भाँसुअहिं होयतहु दोगुन फल ।  
भादव चारि ओ आसिन चारि, अन्त आदि आठ जोड़ी विचारि ।  
कहए "डाक" कराओक वपन, कोही भरि भरि राखव अपन ॥  
जा धरि रहथि बीचक सुर, ता धरि बविअह वन मसुर ॥  
शनि रथि मंगल हो शिवराति, हइहइ पल्लवा बह दिन राति ।  
नदिआक तीरे तीरे कनिअह चास, तकरहु रनिअह थोइने आस ॥  
पल्लवा बहिके बरिसए शीत, ऊँच जोति कए सुनहु निचिन्त ॥  
पहिल पवन पूरव साँ आब, बरिसए मेघ आति मझी लगान ।  
चमके पच्छिम उत्तरा ओर, तौं जनिअह वर्षा हो ओर ।  
परिचम दिश जौं हरिअर मेह, चमके बिजुली वायुन मेह ।  
वर्षा होअए मूसल धार, सात दिन धरि "डाक" गोआर ॥  
जौं देखी कोदरिकटा मेह, ताहि बीच मे वातक नेह ।  
जाय खेतमे बान्ही आरि, "डाक" कहै छथि समय विचारि ॥  
ने ओहि दिन त प्रात दिवस, वर्षा होअए अधिक अवस ॥  
पच्छिम धनुषा होअए सुखा, पूरव देखावय जल लय आबय ।  
दूर माँइरि लग जल, लग देखलें गेल रसातल ।  
चैत धर धर वैशाख पाधर, जेठक राति आकाश चकचक कर ।  
चड़ितहिं वर्षा मेघवा भर, कहए "डाक" ऊँच ऊँचके धर धर ॥  
चन्द्र भाँइरि मे देखी तारा, वर्षा होअए मूसल धारा ।  
इन्द्रधनुष जौं पूवहिं देखी, नीच ऊँच मे एके लेखी ।  
जे छन हो रोहिनि परवेश, पनपति इन्द्र धर्म जेतेश ।  
जल परित घट रोहिनि परयन्त, कहए "डाक" फल कही तुरन्त ॥



धनवति जल जो पूरन देल, गरि सावन जल वर्षा लेख ।  
जम खाली तब वर्षा थोड़, खात्री बरले गृह विशेष ॥  
पूष दक्षिण पच्छिम घट जल, भाद्रप आसिन कातिक कल ।

आषाढ हो नहि आदर किए जात न दीन्हें हेत ।

ई दूनू तबहिं नय परिखत ओ गिरहस ॥

माघ उपन वैशाख जाइ, पहिले वर्षा भरि रोल जाइ ।

धोबी धोवण कृपमे पैलि, कहए "डाक" देहरि पर बैसि ॥

जेठ पूर्णिमा दिन मे पक्षी छोटए धूर,

कहथि "डाक" तेहि वर्षमे वर्षा हो भरिपूर ।

जेठ पूर्णिमा रातिमे मेघ भयानक होण,

किछु किछु पड़बा सञ्चरण महाबुध्दकर साथ ॥

जेठ तपण, अषाढ़ जवय ॥

शुक्लपक्ष ओ नवमी के धार, मास अषाढ़क कहओ विचार ।

भोर भड़ी सुखा करवावण, पहर तेसर बान कहावण ॥

मध्य भड़ी भान उपजावण, सूर्योदय गोरी दिखलावण ॥

बीफे शुक्रक बादरी, रहए शनीपर ज्ञाच ।

कहए 'डाक' सुनु 'भौंडरी' विनु वर्षे नहि जाय ॥

शनि सतहिआ रवि बतहिआ ॥

अषाढ़क पड़बा सोना बहए, सीक होले मही भरए ।

रोहिनि जवण सगशिरा तवण, आद्री देल सुमुखाए ॥

कहए "डाक" सुनु सज्जना, कुहुरो अन्न नहि खाए ।

धान, पान के नित्य स्नान, कहए 'डाक' ई निश्चय जान ॥

अषाढ़ नवमी शुक्ल पक्षा, की कर परिखत लेला जोखा ।

वरिसए मेघ जो सूसर धार, भाँकि समुद्र मे बगड़ा चार ॥

जो मेघ बरिसए फूँटिफूँटी, मलय वृद्धि हो 'डाक' बही ।

मन्द मन्द जो बरपन कर, अन्न वृद्धि खीं पहुँची भर ॥

सिंहक माये पड़बा बहए, तकरहु सावित्राइ डर ।

कहहि 'डाक' सुनु 'भौंडरी' ओष कय चान्हह चर ॥

जो अक्षरेसा गुमकी लावण, मथा निराये शरू बावण ।

जो पूरवा पृ वैखा वाथण, सुखले नदिआ नाव बहावण ॥

साओन पच्छवा भाद्रप पूरवा आसिन बहए ईशान ।

कातिक कन्ता सिक्किओ नहि डाकिय कहाँक रखवह धान ॥

साओन पड़बा बह दिन बारि, बुद्धिक पाछों उपजए सारि ।

वरिसे रिमकिम निशिदिन बारि, कहि गेल 'डाक' वचन परचारि ॥

साओन पूरवा भाद्रप पड़बा, आसिन बहए नैर्द्वैत ।

कातिक कन्ता सिक्किओ न होलव, उपजय नहि भरि धीत ॥

साओन पूरवा बह विकरार, कोही महुआक हो व्यवहार ।

खोजत भेटय नहि थोड़ी अहार, कहत बैन इहए 'डाकगोआर' ॥

जो साओन पुरवैशा बहए, शाही लागु करीन ।

भाद्रप पड़बा जो बहए, होहिं सकल सर हीन ॥

साओन बह जो बहइहासा, बीआ काटि करह मे धासा ॥

॥ इति वर्षा प्रकरण ॥



## अथ गृहस्थधर्म प्रकरण

धन—

मंगल के ओ आरे पारे, केश कटावी कहि गेल गोआरे ।  
शनि मंगल के आरे पारे, केश कटावी कहि गेल गोआरे ॥  
केश कटावी बापे पूत, नहि कटावी बापे पूत ॥  
जहिखन भेटय जाड, तहिखन केश कटाड ॥

गव यत्न परिधान—

कपड़ा पहिरी तीनि दिन, बुध वृहस्पति शुक्र दिन ॥  
शनि जारण रवि फाड़ण, सोम करण सुहाव ॥  
इ मंगल भारण जीव सों, बुध पहिर खर जाह ॥  
नैगटे पहिरी शुक्र लें खाई, जहाँ मन आवण तहाँ जाई ॥

नवांश—

पूर्वादि बीच राशि मे पाव, मात्र फाल्गुनक शुक्र सोहाव ॥  
१। ६। ११। १३॥

कुष्णर्तु मे पंचमी धरि होअ, नन्दा त्रयोदशि जाइए सब कोअ ।  
सुन्दर तिथि, शुक्रा छोड़िधार, सदुचर क्षिप्र नक्षत्र आधार ॥  
जन्मक तैखर तारा हरिषयन्; धनु तुल मे नहि करी नवान ॥

॥ कुंदोग के “सावधानां कृपाकरः” वाक्य अछि तें मङ्गलकें दोष  
नहि थिक, ओ वाञ्छनेयी के रवि कें दोष नहि थिक ।

—पचपन—

जत वन्ध—

१ सुतय उठव पाँजर मोड़ा, ताहि बीचसे जन्मठ होई ॥  
राजराक बेटा रामलाल, आठ नवौमे 'ढाक' बेहाल ॥  
धतहाक चौदह चतहीक आठ, अक्ष स्थानिकए जीवन काट ॥

मन्त्र-महण—

वैतहि दुआ पैसाखमे सिद्धि, जेठ सरण आपाड़ बन्धुनाशकवृद्धि ।  
साश्रोन पुत्र भाइब दुःख देह, सर्वसिद्धि आसीन कारिक ज्ञानरैह ॥  
अनाहन शुभ पूम ज्ञानक नाश, साध मोषा फागुन बितय प्रकाश ।  
कुष्णपक्ष पञ्चमी परयन्त, यदि स आगौ वाङ्छित अन्त ।  
शुक्लपक्ष मे इच्छित सिद्धि, शुभकारक द्रव्य कहओ वृद्धि ॥  
हु ती पा सा इस एवारह, कहथि 'ढाक' ओ तिथि ओ बारह ।  
रिक्ता तिथि कें छोड़वे करी, शेष तिथि मध्यम मानि धरी ॥  
अस्थिर सुग चिथ अनु ओ रेव वसु नक्षत्रें मन्त्र छद लेव ।  
शनि कुज छाहि सुन्दर शुद्ध काल, पंद्र तारा लय शिष्य बेहाल ॥  
सुन्दर दिन मे शुभ प्रवि जाय, मन्त्र लेथि कह 'ढाक' अनाथ ।

मैत्री—

पुष्य चन्द्र मित्र भाग नखता, वृदश मे शुभ बार लिखता ।  
अष्टमी तिथि धिर होएब लग्न, मैत्री कएलें हो नहि अग्न ॥

॥ इति गृहस्थधर्म प्रकरण ॥

१ सुतय = हरिश्चयन, उठव = देवोत्थान, पाँजरमोड़ा = पार्श्व परिवर्तन,  
रामनवमी, जन्माष्टमी, शिवरात्रि, महाश्वती ।

## यात्रा प्रकरण

उजड़ल बसबह पुरुबह ककरा, कोन दिन कोन मुह करबह जतरा ।  
भदवा के नहि जाति ने पाती, दक्षिण उत्तर दूपहर राती ॥  
पुरब गोधुली पश्चिम उषा, कहिँ 'डाक' जे सुखहिँ सुखा ।  
शनि रवि मंगल ओ गुरुवार, दक्षिण पश्चिम करब सैथार ॥  
सोमे शुके बुधे बाय, एहि विधि लङ्का जीतल रास ।  
शनि मंगल भोजन कर बलबह, बोलहु लक्ष्मी पठाटि कए जयबह ॥  
सोमे बुधे शुके उषा, छाड़ह जोतिषी लेखा जोखा ।  
जोड़ खर बलए सोइ पद दीजय, काशहु सँ एक ठकर जीजय ॥  
पहिषा नवमी शनि सोम अथवा, पृथ्व दिशा नहि करिषा गमना ।  
अश्विनि पञ्चक बाण गुरु तेरह, ई सब जानि दक्षिण जनि हेरह ॥  
रवि छठि चौदसि भरणी पुख्त, पश्चिम के थोक इपह बह दुख्त ।  
कुब दुज दशमी शुभ ओ इस्ता, उत्तर गमने भरण अवस्था ॥  
कहहिँ 'डाक' गमन ने करी, नाराहिँ प्राण कोटि बिधि धरी ।  
रवि मूले जे पाबी अङ्का, सोमे अवस्था बजाबी इङ्का ॥

गमन काल जौं बाय दिश, क्यामा बोलए भूप ।  
गोइ सूर अरु सर्प के, दर्शन परम अनुप ॥  
पुर एठत जौं बाय ते, तीसर दक्षिण जाय ।  
कहए 'डाक' शुभ सकुन इपह, मिलिहँ सब मन भाय ॥  
बाय भाग से बोलए गीहर मन बाञ्छित फल पावहुँ शीघर ।

—सतावन—

संमुख दहिन जौं बोल निशार, कहीँ अशुभ कहए 'डाकनोकार' ॥  
निशा राति चहुँ दिशि जौं बोलए, अशुभक द्वार तुरन्तो खोलए ।  
रोगी रीझ सुनारक दर्शन, बामहिँ मलान दाहिन प्रशन ॥  
नीलकण्ठ केर दर्शन होए, मन बाञ्छित फल पावए सोए ॥

बोलए खरहा बाय दिश, भीड़ो बैत सुनाय ।  
फल यात्रा सब शुभ लखो, अन्न धन देहि निखाय ॥  
दाहिन बोलए भय करे, आगे रोगहिँ नश ।  
पीछे बोलए गमन कर, तेजहुँ मन से आश ॥

प्रात समय मुगा चाएँ सँ, दाहिन जाइत सौँ दरखए ।  
सौँग समय दाएँ सँ बाएँ, मन बाञ्छित फल निश्चय पाए ॥  
दक्षिण जौंग पक्षी विशेष, दाहिन दर्शन पुण्यहिँ लेख ॥  
बाञ्छित फल वञ्छण सब पावए, कहत 'डाक' इपह फल मनभावए ।  
बकुल मोर दर्शन शुभकारी, 'डाक' हे सज्जन लेहु बिचारी ॥  
कोकिल मुर्गी सुग्गा कही, जीये मैना सुनहुँ ऐ सही ।  
बाएँ बोलए तो शुभ होई, 'डाक' कहए मनमे लेहु जोई ॥

गमन काल मे खान यदि पटपटाय फान ।  
'डाक' कहि जे प्राण बचए सूकर एवधे मान ॥  
मानव माहिए गजार हय खान शुभ ओ कोर ।  
लङ्क देख यदि मार्ग मे 'डाक' कहि तो फौर ॥  
बिम तीति पुनि चन्नी चारि शूद्र एक रस संख्यक नारि ।  
'डाक' बचन मन ई सुन धारि वैश्य दुई भाणहुँ सौँ नारि ॥

दक्षिण = दही । जौंग = जवङ्ग ।



यात्रा काल नकुल यदि ऐसी नाशक काजकें सिद्धि पेखी ।  
गमन समथ मे काक यदि वाम भाग मे देखी ।  
यश कार्य सिद्धि होए अगनित धन पुनि लेखी ॥  
गमन काल मे यहए वसात विधन बाधा सथे नसात ।  
सुन्दर शिशु युत सुवती नारि भरल कुम्भकुल हो पनिहारि ।  
अथवा जेमकरी सुदुभाषी युक्तक हाथ विप्र गृह घासी ॥  
दधि कोकिल पुनि लावा ओ नीन, ई सब नहि छथि यात्रा हीन ।  
लगहरि माथ विभावधि बाझा, विधन होए सब बिसरु पाछा ।  
'डाक' अगजाती ई देखि, शुभ यात्रा कहथि सब लेखि ॥  
चलत मार्ग मे तुरग मृग दहिन वाम से जाय ।  
'डाक' गनसि चिन्ता तजी धन यश जाती पाय ॥  
अजा एक अरु श्वान घट्ट वृषभ एक गज सात ।  
तीनि धेनु पञ्च महिस से यात्रा शुभ न लखात ॥  
घात वाम दिस सिंघीर बाजए, पहर दुई तेँ शीघ्र राजए ।  
बचन मानि 'डाक'क बड़ भाई, गमन करी कुराल सोँ जाई ॥  
बलुआ कारी पत्ती श्वान, गर्दभ गोदर चापस जान ।  
वामहि भय 'डाक' जोँ चलए, धन यश इच्छा तौनु मिलए ॥  
मंगलक उपा बुधक घात, यात्रा करी 'डाक'क वात ।  
रथि शुभ मंगल उपा जाचो, जान सबहिकोँ कृप मानो ॥  
मास नखखा ओ तिथि धार, जत दिन तासक जोड़ि करी विचार ।  
जोड़ल अंक मे सातक भाग, शेष अंक फल कहथि 'डाक' ॥  
एक बाँचय तँ शुभ कहि दीख, दुइ बाँचय तँ लाभ लव शीख ।

तीनि बाँचय तँ शत्रुकें जय, चारि काज सिद्ध पाँच संशय ॥  
दशो मे सुख शून्य हो दुःख, तीको हितक यात्रेँ नहि सुख ॥  
सापक बीअरि स्त्रीक रज, वैरा लवण देखि यात्रा तज ।  
अपन घर जोँ घटवह जर, झिका हो या पान खसि पर ॥  
कारी घान जोँ गुर्विणी कान, ई असगुन सब 'डाक' जान ॥  
रथि के पान सोम के दर्पन, मंगल किछु किछु धनिआ चर्यन ।  
सुध मे गुड़ गृहस्पति के राई, शुभ कदए जे दही सोदाई ॥  
शनि कहए गोहि अदरक भाव, सकल काजकें जीति घर आव ।  
ने शुनि भदवा ने दिग्गुल, कहथि 'डाक' ई अगुत समनुल ॥  
गामक ठकठक भासक घान, हाथ मुँह दए चिह्नका कान ।  
ताह सोँ जोँ भेटए मलहारी, की होइ राजा की अधिकारी ॥  
वामे फनिपति दहिन सिआर दही रूपह दहीलएह कहए गोआर ।  
लकरो आगोँ जोँ भेटए मलाह, देखि मोन करी परम उछाह ॥  
की होइ राजा की होइ दीवान, कहति 'डाक' जे परन सुजान ॥  
बड़दा चनचर भरल घैल, वेशा राजा देवता दौल ।  
कहति 'डाक' यात्रा करु जानि, गेलहुँ लक्ष्मी देतहु आनि ॥  
भरती सेँ खाली भला, जोँ जल भरने जाय ।  
कहति 'डाक' छुनु भौंछरी, यात्रा अति सुखदाय ॥

देहरीक छटखट नगरक शम्भु चितलाक कोइ महतारि कान ।

ताह सेँ आगोँ भेटए तेजी, एक बेर नहि आगोँ पेजी ॥ (पाठान्तर)

कनकट बुधकट काटल केश, बाट चलेत जों लागय ठेस ।  
केओ पूछए जाएव कतए, भेला बाज बिनाशय ततए ॥  
खाटक खटखट पुष्पक वान, बाट बैसल जों बुद्धि अकान ।  
तीनि कोरा पर जों भेटए तेलि, विधवा ब्राह्मणी मिलए अकेलि ॥  
तापर भेटए बिप जों काना, ब्रह्म देक धार वषए न प्राना ।  
नग्न भग्न गुरुविणी, जोई खट ककशिआर जों आगों होई ॥  
मुखे हाइलए श्वान जों चाभए, कहहि 'डाक' जे मरग श्वाचर ॥  
कुटल पैल ओ दुटल खाट, बाट चलेत व्यास काटल बाट ॥  
चात्राने जों खसए पार, ई सब ताकथि स्वर्गक बाट ॥  
खेत भिखारी गाम सराउ, फेरि पछटि अपन घर आव ।  
काटल कपचल धकड़ल केश, बाट चलेत जों लागय ठेस ॥  
बायन मे जों भेटए कान, ब्रह्मलोक धरि वचए न प्रान ॥  
वज्रइल अचबह जणवह कीन भालि, दिनगे पूरव पच्छिम राति ।  
गोधुलि दक्षिण उत्तर उषा, कहए 'डाक' ई मुखममुखा ॥

॥ इति यात्रा प्रकरण ॥

### अद्भुत प्रकरण

कमल गाय चोटक गज साप, साबय सुन्दर भूमि पर आप ।  
खलन बैसल देखी राज, 'डाक' कहथि जे कुशल समाज ॥  
भरमहि बैसल अह नखकेश, भुलहि देखि ने दुःख कलेश ।  
ऊपर देखने धनक बुद्धि, पूव कहै छथि कारज सिद्धि ॥

अग्नि कोव मे बहुधन होथ, दक्षिण देखने अग्नि उड़ोथ ॥  
नैऋति देखने भगव विशेष, पश्चिम देखने धन अशेष ॥  
सुन्दर वस्त्र सुगन्धित बल, वायव देखने ई सब फल ॥  
उत्तर देखने सुन्दरि नरि, ईशहिं मुख कहहि पुकारि ॥  
एहि विधि पछोके बजयो जान, छिक्कहुं से कह 'डाक' बखान ॥  
दक्षिण छीके धन लए लीजए, नैऋत कोव सिद्धासन दीजए ।  
पच्छिम छीके मीठ भोजन गेलहुं पलटए वायव कोन ॥  
उत्तर छीके भान समान, सर्व सिद्ध लए कोन ईशान ॥  
पूरव छिक्का मुख दुहार, अग्निकोव मे दुःखक भार ॥  
सबकेर छिक्का कहि गेल 'डाक', अरने छाकहिं नहि कस काज ॥  
आकाशक छीके जे नर जाय, पछटि यज्ञ मन्दिर नहि खाय ॥  
कार्यारम्भ मे छीके कोई, सुनकर मन्त्र विचारहु सोई ॥  
नापो पाएरक छाया अपन, अंगुली से गिन लेहु मगेसन ॥  
ता, मे तेरहु आओर मिलाव, तखन आँठहि भाग जगाव ॥  
माग देइकेर शेष जो बाँचए, कहत 'डाक' लाकर फल सौंचए ॥  
एक वचए तो लाभ बुझावए, कार्य सिद्ध दुइ मँह जचावए ॥  
तीनि वचए तो होवए हानी, चारि रहए तो शोक बखानी ॥  
पाँच रहए भयकौ उपजावए, छथो वचए तो लक्ष्मी आवए ॥  
सात वचए तो दुःखहिं जाना, गूढ शेष सँ निष्फल माना ॥  
पदछाया केर इएह विचार, सुन 'भौड़ि' कह 'डाक' मोआर ॥  
पूठ बायने छिक्का सुनी, कुशल कार्य सब निखी सुनी ॥  
सन्मुख छीक कलह बढ़ाएव, दाहिन बिलक नाह करायव ॥



अपन डीक सखसँ भयकारी, हन्य नाश विपत्ति दुखकारी ।  
सरदी सुघनी बलक छिछा, 'डाक' कहथि ई सब फिका ॥  
पल्ली खसए जौ सरटा चढ़ए, एहि विधि फल 'डाक' पढ़ए ।  
मस्तक खसए तौ राजाश्री होइ, भालहिँ ऐहवर्ष कहए सखकोइ ॥  
कानहिँ खसने भूपन लाभ, ओहिँ पर खसने बन्धु मिलाए ।  
नाकपर खसने सुगन्धि देखाए सुखपर खसने मिष्टान्न खोआए ॥  
कण्ठहिँ श्री हो घावाशाह, बाहु पर खसने विभव बधाइ ।  
बाहुमूक मे होए समृद्धि, हाथ दुः पर धनक वृद्धि ॥  
स्तनमूल मे सुभर भाग, हृदयमे खसयतौ सौख्य सोहाग ।  
बीठपर खसयतौ पृथ्वी प्राप्ति, पौँजरहिँ खसने बन्धु मिलासि ॥  
ढाँड़ पर खसयतौ लाभ होय वस्त्र, गुश्ममे खसने सुख अवश्य ।  
बाँचपर खसने धनक डालि, गुदमारगहिँ रोगभय आनि ॥  
ऊपर खसयतौ बाहन आच, जातुजयमे धन चल जाय ।  
पाए पर खसने रटना होय, कहथि 'डाक' एहिविधि फल होय ॥  
एहि पल्ली चहुँ नरतन जाय, सरट खसए जौ ओहि विधि आय ।  
फलहुक अलटा करितहुँ जानि, 'डाक' कहै छथि युक्ति बखानि ॥  
रातिमे जौ पल्ली चढ़ए, सरटक खसने 'डाक' पढ़ए ।  
मरन निमित्तक होयए साई, नहिँ तौ व्याधि अवश्य होई ॥  
खमितहिँ यदि ऊपर बाढ़ि जाय, खसने नीक चढ़ए नै सोहाय ।  
झाया जौ दक्षिण दिश देखी, दुइ दिशझायाक देखने लेखी ।  
झाया देखी मुखविहीन, चन्द्र सूर्य दुइ राति ओ दीन ॥  
दुनु बिम्बमे छिद्र देखाय, उदय अस्तमे तुमक जाय ।

पौँज सौ पढ़य तपन मे प्रेत, अथवा देखलहुँ होअइ सचेत ॥  
वस्त्रपात होय जाइ घर, उलकापातहुँ भासइ घर ।  
कच्छ मस्य जौ बर्षन होय, इन्द्रधनुष निश देखल जाय ॥  
अरुन्धती जे देखथि नहि, माथहिँ भिट काक वैसु अपनहि ।  
देखी जौ ई सब उत्पन्न, करी पवित्र संगहि निज मात ।  
दश सात पौँच पन्द्रह दिन ओइ, 'डाक' तफै छथि दक्षिण वाट ॥  
देखता आभनक पूजा करी, ताही पुर्यै प्रचनो करी ॥  
अधिक क्रोध होयए अति घर, से जस वपक पुरितए मर ।  
अचके मोट वा पोतर देइ, वर्ष चितैतै यमक मोह ॥  
देवता परिहण गुरु भूदेव, माय चाप जौ राजहिँ सेव ॥  
एहि सातोक निन्दा कर, कहए 'डाक' वर्षहिँ यमघर ॥  
श्रीपगन्धरी अरुन्धती तारा, नहिँ छगए देखने बेचारा ।  
'डाक' कहए सुनु 'गोड़रि रानी' जायि यमकघर वर्षहिँ सानी ॥

जन्म लग्न सँ गंगल सात, चन्द्रहुँ सँ जनिअइ ई बात ।  
विधवा होइतिहँ से कुमारि, कहए 'डाक' ई प्रह विचारि ॥  
सातम सूर लग्न सँ जकरा, कहए 'डाक' पति छाड़ए तकरा ॥  
सातम शनिके पाव जौ देख, कन्या धरतहुँ लम्पट वेश ॥

१ भूदेव = ब्राह्मण ।

१ संस्कृत पुल—

दीपनिर्वाणमथञ्च मुहूर्त्तवाक्यमण्डलीम् ।

न जिहृन्ति न शृण्वन्ति न पश्यन्ति गताश्रयः ॥



काक चेषा विचार—

तनु अति कारी बहका लोल, पैय काक अति ऊँचे बोळ ।  
ताहि काक केँ थाभन जान, कहथि 'डाक' जे आन नहि मान ॥  
पिंगल आँखि नील रङ्ग ठोर, सब देह कारी सत्री सोर ।  
पांडु नील रङ्ग चौंच ओ देह, कहथि 'डाक' जे वैरय कहि लेह ॥  
भसमक रङ्ग ओ दूबर शरीर, करकर खाजए रङ्ग नहि थीर ।  
ताहि 'डाक' कहि शूद्र पुकारि, एहिसेँ आन थीक अन्त्यज हारि ॥  
पौँचो मे मुख थाभन जान, असगुन सगुन नकरे जान ।  
जोँ मांस वोकरए आगोँ आवि, कहथि 'डाक' जे धन पावि ।  
आगोँ लावय मॉँटिक डेय, भूमि लाभ हो ताही खेप ॥  
रस्त आनि जोँ राखय अम, कहथि 'डाक' जे राज हो समग्र ।  
काक द्वार मे आवय जाय, कहथि 'डाक' जे पाहुन पाय ॥  
जूना छाया शम्भु सवारी, छाया अंग नौँचे काग कारी ।  
स्वामी मृत्यु देखावय काक, फूल चढ़ओने पूजित हो 'डाक' ॥  
असमय तीनि दीन सँ ऊपर, जाहि देश वर्षा हो भूपर ।  
देशक प्रधानक होय मरन, कहथि 'डाक' जाव ईशक शरन ॥  
सात राति जोँ असमय वृष्टि, ताहि देस मे इन्द्रक वृष्टि ।  
स्वर्गधाम केँ राजा जाय, कहए 'डाक' कय निश्चय भाय ॥  
असमय बरिसय मरमर बादर, समय मे होय नेचवा कादर ।  
सकल प्रजागण रोगेँ पूर, भयक कारणेँ 'डाक' भेल चूर ॥  
प्रतिमा ईसए ओ मूने नैन, रोदन करए बाजए बैन ।  
धूर्ध्रा ऊठए ज्वाला देख, अति भय होय देश मे लेख ॥  
अकल देव प्रतिमा मे जान, कहथि 'डाक' जे हाय नहि जान ॥

बिन कारण जोँ अंगक भंग, प्रतिमा चल तनु वामक सङ्ग ।  
नेत्र सँ नीर जोँ मुक्कना जाय, प्रतिमा बाजब मुनलौँ जाय ।  
कहए 'डाक' निश्चय भूपाल, देशक राजा मरय ओहि साङ्ग ॥  
कुङ्कुर विदारि जोँ धन जाय, चनक हरिना गाय देखाय ।  
गगनहि गीथ धूमि के आव, भवन भीति चैमय सुख पावि ॥  
गदहाक सन सुह नेनाक रुपज, बोझा भँझा खचर अज ।  
अनेक रूपक मनुष बिआय, देव प्रतिमा खसल देखाय ॥  
जाहि देश मे ई मय उतपान, देश छाड़हि केँ भागद परान ।  
कहथि 'डाक' सय तरहेँ दुःख, लोके खएतहु लोकक मुख ।  
कौआक बीचमे कुङ्कुर बाज, राति दिन जोँ इएह समाज ।  
कहथि 'डाक' सुनु 'भौँदरि रानी'; ओहि देशमे भय अति मानी ॥  
मुख्य घरमे काकगन पएसल, बजितहि गिदरा मोरहिँ नएसल ।  
गगनहि गिद्धक मुण्ड कँडराय, अति भय 'डाक' केँ शीघ्र देखाय ॥

गौदर दिन मे बोलही, काग निमि मे भोल ।  
कहए 'डाक' पड़ए काल तब, निअय घर-घर होल ॥

नेनाक दन्त जंगक प्रसङ्ग

पहिनहि ऊपर जन्मल दौल, बापहिँ खएतहु अथवा मात ।  
दौल लेने जन्मए बाल, माय बाप ओ 'डाक'क काल ॥  
अबकेँ खाव अपनहुँ नहि वाँच, कहथि 'डाक' तौँ मुभइ जाँच ।

श्वानचेषा विचार

दहिन पाएर सँ श्वान यदि, अम निम्न कुडिआय ।  
श्वर माथ अरु कण्ठ गुद, सुखद राखय धन पावए ॥



हृदय नासिका कण्ठ युग, नेत्र घृष्ठ ओ भूमि ।  
फल सुखदाई हो एकर, "डाक" कहै छथि जूमि ॥  
उक्त अंग सब वाम पग, खजुआचय यदि श्वान ।  
फल जानी पुन अपशकुन, "डाक" कहाँथ परमान ॥  
श्वान करए क्रन्दन जहाँ लोटए भूमि पर जाए ।  
"डाक" कहाँथ निश्चय तहाँ आवर विपदा धाए ॥

॥ इति अशुत प्रकरण ॥

### ग्रहण

रवि सँ चन्दा सात में, राहु सँ हो एकन्त ।  
तखन ग्रहना लागिए, कधी लए खड़ी घसन्त ॥  
जाहि नखत्ते रवि तपे, ताहि अमावस होए ।  
किछु किछु पड़िया सचरण, सूर्यपव तथ होए ॥  
एक मास जा दुइ गहन, घोर बुद्ध भूपति केँ तखन ।  
जलवपी नहि होवए साल, "डाक" कहै छथि सुनू भूपाल ।  
पहिले सूरज पौछा चन्द, गरहन्त लगलें "डाक" असन्द ।  
पहिले चन्दा पौछा सूर, गरहन्त देखलें रीते पूर ॥  
गृहपति घरनी कलह घोर, कहए "डाक" सुनू कहल मोर ॥

### प्रश्न प्रकरण

पुछाबहार ओताक नामाचर, तिथि दिन गाल नत्तर एक कर ।  
रावणक सुहँ भाग करु, शेष अंक सँ फल उचारु ॥

सात पाँच तीनि मंगल बात, नखो एक मिद्धि हाथे हाथ ।  
इओ चारि मे कार्य विफल, दुइ आठ नाशें काज सकल ॥  
प्रश्नकर्ताक नाम जत अचर, जवना मात्रा फराक कय धर ।  
अचर दोगुन चौगुन मात्रा, सय मिलाय करी एकत्रा ॥  
तीनि अङ्क सँ भाग कर देख, शेष बाँचए फलक लेख ।  
एके शीघ्र दुइ फल मे देर, शून्ये नाशें "डाक"क फेर ॥  
जत मास गर्भ तारिकेँ नाम, जत जन थैसल छथि ओहि ठाम ।  
जोड़ि अचर सय हो जत अंक, साते हरने बाँचए जे निरंक ॥  
'डाक' कहए एक दुइ ओ पाँच, बाँचए पुत्र करविअह नाच ।  
एहि सँ आन जा बाँचए आनि, चन्दा देखलें बड़ पुख पाबि ॥  
गाम नाम आ गुर्विणी, नाम अचर एक फल ।  
"डाक" जाइ छथि एक कय, तीनि भाग जे बाँचल ॥  
एक पूत दुइ कन्याक आस, शून्य बाँच तँ गर्भक नाश ।  
प्रश्न फल जा उलटा देखी, खामीक गर्भ मे संशय लेखी ॥  
अचर दोगुण चौगुन मात्रा, नामे नामे करी एकत्रा ।  
तीन अंक सँ भाग करी, भाग शेर सँ उचर भरी ॥  
ए शून्ये पहिलें पात, दुइ रहय तँ जाय युवति ।

### वनस्पति प्रकरण

वृक्ष रोपवाक

का 'डाक' तँ सुनइ रावन, केरा रोपी अपाढ़ साध ।  
ती सए साठि जे केरा रोपए, आवि निचिन्त घरहि भए सुता ॥



केरा रोपी काटी नहि पात, केरे देतहु धोखी भात ।  
 काशुन केरा रोपल जाय, मांस मांस फड वैसल खाए ॥  
 काशुन केरा ई चुत चैत, कातिक श्रोन कहि तार ।  
 तीनि विलखे तेरह हथ्ये, तीनि मासे तीनि दिने ॥  
 भादव भदवा सीमी वारि, केरा रोपी दिन बिचारि ॥  
 जौ नहि बरिसए अगहन मेष, कटहर गाछ फें होए घेष ।  
 कहि 'हाक' जौ होए पानि, दुटल ठारि कह गाछ बानि ॥  
 गूषा गोबर बाँसहिँ मौंदि, बाँक नारिकेरि सिक्कठि काटि ।  
 ओलमे कुरकुट छौँह मान, बहए फलए ई 'हाक'क गान ॥  
 डुमरी पीपरि पाकडि बड़, असमय फूलए देखि पड़ ॥

### विविध प्रसङ्ग

बाभन कुला हाथि, तीनू जातिअहिँ खाथि ।  
 कायध कौआ रोड़, तीनू जाति बटोर ॥  
 सए मे एक सहस्र मे काना, सवा लाख से ईँचा ताना ॥  
 ईँचा ताना कहए पुकारि, हम मानल कुहरा सँ हारि ॥  
 खिचदी सङ्ग जे नखरी खाए, मुइला बहुक नैहर जाए ।  
 बाट चलैत जे गावए गीत, कहए 'हाक' ई तीनू पतीत ॥  
 बावी ठकनहि भाष मिले, कहिगेल 'हाक' गुआर ।  
 चैत तुए तीनि लए मोए, कहहिँ 'हाक' रौंदी होए ॥  
 दिनमे बदरा रातिमे निबदर, बह पुरवया हथर हथर ।  
 कहहिँ 'हाक' विआ जनु खोअह, धानक खेतमे राइदि बोअह ॥

### प्रकीर्णध्याय

बड़द कीनवाक प्रसङ्ग

बएल कीनए जाइछ कन्ता, कएल गोल के न देखइ दन्ता ।  
 चरक कसीटी सउरा धान, एहि छाड़ी जनु किनइ आन ॥  
 आहि पार मे देखिअह मैना, एहि पार सँ फेकिअह बैना ॥  
 तीतर पंखी बादरा, विधवा कजल रेख ।  
 ओ घर करए, ई बरिसए एहि मे सीन न मेष ॥  
 शनि रवि परकी मङ्गल खाट, ई सभ ताकए स्वर्गक बाट ।  
 साठी उरजय साठि दिना, जौ मेष बरिसय राति दिना ॥  
 धनमे धान आओर धन गाय, किछु किछु सोना आओर सब छाय ।  
 वरदा बहए तँ अपनहुँ बही, नहि यदि होए तँ नैसलो रही ।  
 जे कहए हर बहए कहीं, कहथि 'हाक' घंटो नहि तहीं ॥  
 हर बहए जे सङ्ग सङ्ग बही ॥  
 निचह खेती दोसरहि गाय, जे नहि देखए तकरहि जाय ॥  
 काँची कुची बैस्या घालए, ब्राह्मण घालए दासी ॥  
 ..... खोरहिँ घालए चकासी ॥  
 मोट दतमानि जे करए, नित छठि दरड़ा खाहिँ ।  
 दुध सलाका जे पिबए, ता घर वैद न आहिँ ॥  
 खाएक मूती सूती वाम, वैद अनएवाक कोनो ने काम ।



—सत्तरि—

महती सँ बहिया भेल थरी, कहए 'हाक' सन्तापहि मरी ॥  
पज्जवा सँ उधड़ए मेघ, बिधवा करए सिंगार ॥  
ओ उधड़ए ओ बरिसए, कहि नैल 'हाक गुआर' ॥

वर्ग विचार—

अ इ उ ए गकड़; क ख ग घ गजार ॥  
च छ ज भ सिद्ध; ट ठ ड ढ स्थान ॥  
त थ द ध नान; प फ ब भ भूत ॥  
थ र ल व हाथी; स ष ष ह मेघ ॥

योगिनी विचार—

पत्ती पक्षा खरसा दोआ, नवे नवे योगीन होआ ॥

—३१७७—



## शब्दार्थ—संग्रह

(अ) अचके—अकस्मात्

अज—बकरी

अवरण—आव

अन्—अनुराधा नक्षत्र

अभिजित्—नक्षत्रविशेष

अलि—घुड़नक

अश्विनीपञ्चक — अश्विनी

भरणी पञ्चक,

रोहिणी, मृगशिरा

अहिमर—अहिमर—गणप,

स्वर संख्या ७ =

(आ) अष्ट—अष्टमोतिथि

(इ) इन्द्र—मूलिक फल विशेष ।

इन्द्रमर—मूलकस्वर एक—१

संख्या ।

इन्द्र—पूर्वादिशा

(ई) ईश—स्वामी,

(ए) एगारह—एकादशी तिथि

एगारह—११-३, १-७ तिथि

(क) कौटुम्बिक—समस्त

कटिपदी—छटपट

कलस—कुम्भराशि

कलह—हमड़ा

कफाम—कदीमा

कान—शूक

काना—कनहा

कीर—गुल्म

कुजा—मङ्गलविष

कसरि—पिहुराशि

क्षिप्र—शीघ्र

क्षिप्र—नक्षत्रक संज्ञा विशेष

क्षेम—कल्याण

(ख) खेप—हक्कर

(ग) गज—हाथी

गजमर—हाथीकस्वर, ३ संख्या ।

गणना—गणन

गलग्रह—एक ग्रहसङ्घ

(घ) घर—कुम्भराशि